2013

Apani Kamaayi

अपनी मेहनत अनमोल

लोग धन को खर्च करते हैं पर खर्च करने के तरीके में फ़र्क देखने को मिलता है । इस फ़र्क से ही हम समझ सकते हैं कि वह धन व्यक्ति विशेष की अपनी कमाई का है या अन्य की कमाई का।

Lokesh Ch. Lal

8/27/2013

अपनी कमाई

पात्र - **ठाकुर** (पिता) / **सावित्री** (ठाकुर की पत्नी) / **मीरा** (ठाकुर की बेटी) / **हरीश** (ठाकुर का बेटा) / **सेठ**

ठाकुर : (सावित्री से) सुनती हो, ओ हरीश की माँ, जरा एक गिलास पानी तो लाना। (फिर बैठ जाता है)
सावित्री : (पानी देते हुए) हाँ, लीजिए। बड़ी चिंतित लग रहे है। क्या बात है?
ठाकुर : बात क्या होगी! हम तो बुढ़े हो रहे है। इतना बड़ा कारोबार है। पर मैं तो हरीश को समझाते हुए थक गया हूँ। जरा तुम ही उसे समझाओ।
सावित्री : मैं क्या समझाऊँ ? वह तो दिन भर इधर - उधर घूमता रहता है। घर पर आता कब है ? और कभी आता है, तो खाकर, सो जाता है।
ठाकुर : पता नहीं इसका क्या होगा ? (तभी हरीश आता है)
ठाकुर : (बेटे से) कहाँ गये थे?
हरीश : पिताजी, दोस्तों के साथ घूमने गया था।
ठाकुर : तुम सिर्फ घूमते रहो। उनलोगों के तरह क्या तुम्हारा भी कोई काम - धंधा नहीं है क्या?
सावित्री : अब छोड़िए भी, आते - आते शुरु हो गये, पहले इसे हाथ - पैर धोकर कुछ खा - पी तो लेने दीजिए। (बेटे को साथ घर के भीतर ले जाती है)
ठाकुर : और बिगाड़ो अपने लाडले को। मुझे ही कुछ करना होगा।

दूसरा दिन / दूसरा दृश्य

ठाकुर : हरीश, आज मैंने यह फैंसला किया है कि यदि तुम कुछ कमाकर नहीं लाओगे, तो आज रात का भोजन तुम्हें नहीं मिलेगा।
हरीश : पिताजी, आप यह क्या कह रहे है?
ठाकुर : जो मैं कह रहा हूँ उसे तुम ध्यान से समझ लो। (हरीश कुछ देर सोचता है। ठाकुरजी चले जाते है)
हरीश : क्या करूँ, क्या करूँ, हाँ, माँ - माँ। (माँ के पास जाकर)
सावित्री : क्या हुआ बेटा ?
हरीश : माँ पिताजी ने कहा है कि यदि मैं आज कुछ कमाकर नहीं लाऊँगा तो मुझे आज रात का भोजन नहीं मिलेगा। मैं क्या करूँ माँ ? (रोते हुए)
सावित्री : इसमें रोता क्यों है ? ये ले पैसे और सुन कह देना कि मैंनें कमाए है। समझा।
हरीश : (खुश होकर) मेरी अच्छी माँ ! (चला जाता है)
ठाकुर : (हरीश से) क्या तुम आज कुछ कमाकर लाये हो?
हरीश : हाँ पिताजी। ये लीजिए।
ठाकुर : जाकर इसे कुँए में फेंक दो। (बेटा बिना कुछ बोले पैसे कुँए में फेंकने चला जाता है अनुभवी पिता यह समझ जाते है कि यह उसकी अपनी कमाई नहीं है) हरीश की माँ, ओ हरीश की माँ।
सावित्री : हाँ आती हूँ। क्या हुआ?
ठाकुर : क्या तुमने हरीश को पैसे दिये थे ?
सावित्री : हाँ, मैंने ही दिये थे। पर बात क्या है ?
ठाकुर : आज दे दिये थे, पर आज के बाद फिर मत देना। समझी।
सावित्री : हाँ समझ गयी।

तीसरे दिन / तीसरा दृश्य

ठाकुर : हरीश, हरीश, ओ हरीश।

हरीश : हाँ पिताजी, आया।
ठाकुर : कल की तरह आज भी मेरा वही फैसला है । समझे।
हरीश : मतलब पिताजी, यदि आज भी मैं कुछ कमाकर लाऊँगा तो ही मुझे आज रात का भोजन मिलेगा वरना नहीं मिलेगा।
ठाकुर : हाँ, बिल्कुल सही, ऐसा ही होगा।
हरीश : अच्छा पिताजी । (हरीश सोच में पड़ जाता है। पिताजी चले जाते है । हरीश माँ के पास जाता है।) माँ, माँ।
सावित्री : क्या हुआ बेटे ?
हरीश : माँ, पिताजी ने फिर मुझे कुछ कमाकर लाने के लिये कहा है। मुझे आज भी कुछ पैसे दो न माँ, मेरी प्यारी माँ।
सावित्री : नहीं, नहीं, आज मैं तुझे पैसे नहें दे सकती। तू जा खुद कमा।
(हरीश सोचता है और वह अपनी दीदी को आवाज लगाते हुए जाता है।)
हरीश : दीदी, दीदी।
मीरा : क्या हुआ भाई ? इतना परेशान क्यों है ?
हरीश : दीदी, दीदी, पिताजी ने कहा है कि यदि मैं आज कुछ कमाकर नहीं लाऊँगा तो मुझे आज रात का भोजन नहीं मिलेगा । मैं क्या करूँ दीदी ? (रोते हुए)
दीदी : अच्छा रुक ! मैं तुझे बीस रूपये देती हूँ ।(पैसे देती है।)
हरीश : मेरी अच्छी दीदी।

शाम के समय

हरीश : पिताजी, पिताजी।
ठाकुर : हाँ हरीश, क्या तुम आज भी पैसे कमाकर लाये हो।
हरीश : हाँ पिताजी, ये लीजिये।
ठाकुर : ठिक है, जाकर इसे भी कुँए में फेंक दो।
हरीश : ठिक है पिताजी।
(खेलते हुए पैसे कुँए में फेंकने चला जाता है । अनुभवी पिता यह समझ जाते है कि यह उसकी अपनी कमाई नहीं है।)
ठाकुर : हरीश की माँ, ओ हरीश की माँ।
सावित्री : हाँ, क्या हुआ ?
ठाकुर : क्या तुमने फिर हरीश को पैसे दिये थे ?
सावित्री : नहीं जी । मैंने तो नहीं दिये । शायद मीरा ने दिये होंगे ।
ठाकुर : ठिक है, मीरा को बुलाओ।
सावित्री : मीरा, ओ मीरा।
मीरा : हाँ माँ। (आती है)
ठाकुर : क्या तुमने कल हरीश को पैसे दिये थे ।
मीरा : हाँ पिताजी ।
ठाकुर : क्यों दिये थे ?
मीरा : वह कह रहा था कि पिताजी ने कहा है ... ... (कुछ सोचते हुए) कुछ याद नहीं आ रहा है, पर बात क्या है पिताजी ?
ठाकुर : कुछ नहीं पर याद रहे आइंदा वह पैसे माँगने आये तो मत देना समझी ।
मीरा : हाँ पिताजी बिल्कुल समझ गई ।
(सावित्री और मीरा दोनों चले जाते है पिताजी टहलते है)

चौथा दिन / चौथा दृश्य

हरीश : पिताजी, पिताजी ।
ठाकुर : क्या हुआ हरीश ? बोलो क्या कहना चाहते हो ?

हरीश : पिताजी क्या आज भी वही शर्त है कि यदि मैं कुछ न कमाऊँ तो रात का भोजन नहीं मिलेगा ?

ठाकुर : बिल्कुल यही बात है । आज मुझे अच्छा लगा कि कुछ समझदार हो गये हो ।

(हरीश दीदी के पास जाता है)

हरीश : दीदी, दीदी, आज भी मुझे बीस रूपये दो ना ।

मीरा ना बाबा ना, अब मैं तुझे पैसे नहीं दे सकती ।

हरीश : क्यों दीदी ?

मीरा : ये मत पूछ भाई कि क्यों । पर ये समझ ले कि मैं तुझे नहीं दे सकती ।

(उदास होकर हरीश वहाँ से चलने लगता है । कुछ सोचने के बाद वह बाज़ार जाने को सोचता है ।)

हरीश : चलो आज बाज़ार चला जाये । (अपने आप से कहता है ।)

बाज़ार का दृश्य

सेठ : कूली, कूली, क्या बात है ? आज कोई कूली नहीं दिखाई दे रहा है । (हरीश को देखते हुए) ऐ लड़के, ऐ लड़के, क्या तुम कूली हो ? क्या तुम मेरा बक्सा उठाकर मेरे घर तक ले चलोगे ? इसके बदले मैं तुम्हे दस रूपये दूँगा ।

(हरीश कुछ देर सोचता है ।)

हरीश : हाँ, ज़रूर क्यों नहीं ? मैं ज़रूर आपका बक्सा उठाकर ले चलूँगा लेकिन आप इसके बदले मुझे दस रूपये देंगे ना ?

सेठ : हाँ, क्यों नहीं ?

(हरीश बक्सा उठाता है । बक्सा काफी भारी है ।)

सेठ : सम्भालकर, ऐ लड़के, ठिक से उठाओ ।

(हरीश बक्सा उठाकर सेठ के पीछे पीछे चलता है । पसीने से तर हो जाता है । उसके पैर लड़खड़ाने लगते है ।)

सेठ : हाँ, बस यही रख दो । ये लो तुम्हारे दस रूपये ।

हरीश : (दस रूपये लेते हुए) धन्यवाद

(हरीश घर आता है काफी थका हुआ है । पिताजी आँगन में टहल रहे है ।)

ठाकुर : रूको हरीश । आज क्या कमाये हो ।

हरीश : पिताजी दस रूपये । (बड़े धीमे स्वर में बोलता है ।)

ठाकुर : दस रूपये (भौंगें चढ़ाते हुए) ठिक है जाओ, इसे भी कुँए में फेंक दो ।

हरीश : क्या ! आपने क्या कहा ? कुँए में फेंक दूँ । इसे कमाने में मैंने खून पसीने एक कर दिये, मेरे पैर काँपने लगे और आप कह रहे है कि मैं इसे कुँए में फेंद दूँ । नहीं, मैं इसे किसी भी कीमत पर नहीं फेंकूँगा ।

ठाकुर : बेटा आज पता चला तुम्हें कि अपनी कमाई क्या होती है ? आजतक तुम मेरे द्वारा कमाए हुए पैसे को बेपरवाह खर्च करते रहे पर आज अपने द्वारा कमाये हुए बस दस रूपये मूल्यवान लग रहे है ।

हरीश : पिताजी, आप क्या समझाना चाह रहे है, मैं समझ गया । (सिर झुकाए हुए कहता है ।)

ठाकुर : बेटा, अब मुझे यकीन हो गया है कि तुम मेरा काजोबार अपनी पूरी मेहनत और लगन से सम्भालोगे और उन्नति भी करोगे ।

हरीश : हाँ पिताजी, अब मैं पूरी लगन के साथ मेहनत करूँगा । मुझे आशीर्वाद दीजिए ।

शिक्षा : अपनी कमाई मूल्यवान होती है ।

शेष x शेष x शेष